www.bohalsm.blogspot.com
Impact Factor : 3.811
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
22 जून 2021–वेबिनार विशेषांक Page No. : 497-500
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

हिन्दी कविताओं में पर्यावरण विमर्श

–डॉ. सलीम बाणदार
नेहरु कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, घण्टीकेरी हुब्बल्ली।

मानव जीवन एवं पर्यावरण एक दूसरे के पर्याय हैं। जहां मानव वहां प्रकृति है। हमारे प्राचीन वेदों में पर्यावरण के महत्व को दर्शाया गया है। हिंदी साहित्य में आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक प्रकृति को हमेशा विशिष्ट स्थान दिया गया है। हिन्दी साहित्य में पर्यावरण पर आधारित बहुत से रचनाएँ है। मानव और समाज का प्राथमिक कर्तव्य है प्रकृति की रक्षा करना। हिन्दी के साहित्यकारों ने अपने साहित्य में प्रकृति का वर्णन किया है। महाकवि तुलसीदास जी के रामचरितमानस में प्रकृति और पर्यावरण का चित्रण मिलता है। रहीम ने भी पानी के उदाहण से जीवन के तत्व का और पर्यावरण का ज्ञान कराया है :–

"रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सुन!
पानी गए न ऊबरे, मोती मानुस चुन!!"[1]

मनुष्य अपने स्वार्थ में लिप्त होकर प्राकृतिक के संसाधनों का बहुत नुक्सान किया है। जंगलों के नाश होने के कारण जल और वायु पर प्रभाव पड़ा है। जिससे लोगों को शुद्ध हवा और पानी नहीं मिल रही। जंगल की कटाई से बारिश कम हो गई है जिससे नदियाँ सूखने लगे झरने मिचन लगे हैं।

हिन्दी साहित्य में प्रकृति के विनाश का शुरु से ही विरोध देखने मिलता है। भक्तिकाल के कवि– कबीरदास, तुलसीदास, सूरदास, म.मो.जायसी, रहीम, मीराबाई आदि ने अपने रचनाओं में प्रकृति का कई स्थानों पर रहस्मय वर्णन किया है। जब श्रीराम वनवास गये तो उन्हें अधिक खुशी इसी बात की हुई थी कि उन्हें वन–क्षेत्र में प्रकृती और ऋषि–मुनियों के सत्संग का लाभ प्राप्त होगा इसलिए श्रीराम कहते हैं :–

"मुनिगन मिलन विशेष वन, सबहिं भांति हित मोर"।

प्रकृति का आवश्यकतानुसार उपभोग करने पाठ संस्कृति के उपदेशों में की गयी है जैसे कि वृक्ष से फल तोड़कर खाना तो उचित है लेकिन वृक्ष को काटना अपराध है :–

'रीझि–खीझी गुरूदेव सिष सखा सुसाहित साधु।
तोरि खाहु फल होई भलु तरु काटे अपराधू'।

वृक्षारोपण से प्रकृति को विकसित करने के लिए राम ने अपने वनवास के दिनों में सीता और लक्ष्मण के साथ वृक्षारोपण की ओर सकेंत करते हुए कहा है :–

"तुलसी तरुवर विविध सुहाए। कहुं–कहुं सिय, कहुं लखन लगाए"।

प्रकृति के पाँच तत्व :– वायु, जल, अग्नी, पृथ्वी तथा आकाश से ही मानव शरीर की रचना हुई है। इसी के उदाहरण के रुप में तुलसीदास ने रामचरितमानस के किष्किन्धाकांड में लिखते हैं :–

Edit with WPS Office

"छिति जल पावक गगन समीर
पंच रचित अति अधम सरीरा"।

रीतिकाल के कवियों ने भी प्रकृति की सुन्दरता का अलंकारिक वर्णन करके अपनी रचनाओं में चार चाँद लगा दिया है। बिहारी, भूषण, देव, मतिराम पद्माकर, सेनापति आदि कवियों ने प्रकृति के सौंदर्य को अपनत्व दिया है।

आधुनिक काल के साहित्यकारों में जैसे आचार्य रामचंद्र शुक्ल, आचार्य हजारीप्रसाद दिवेदी, मैथिलीशरण गुप्त, श्रीधर पाठक आदि कवियों ने भी प्रकृति के अनावश्यक शोषण के विरुद्ध आवाज उठाकर मनुष्य को प्रेरित किया है। छायावाद के प्रमुख कवि और कवयत्री महादेवी वर्मा, सुमित्रानन्दन पंत, जयशंकर प्रसाद और सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' ने भी अपनी कविताओं में प्रकृति के रूपों का अनोखा वर्णन किया है।

प्रकृति के सुन्दर रूप का वर्णन मैथिलीशरण गुप्त जी ने साकेत, पंचवटी, सिद्धराज, यशोधरा, किसान, झंकार आदि ग्रंथों में किया है। गुप्त जी रात्रि की वेला का मनोहारी वर्णन पंचवटी रचना के इन पंक्तियों में इस प्रकार करते हैं–

"चारू चंद्र की चंचल किरणें खेल रही हैं जल थल में,
स्वच्छ चांदनी बिछी हुई है अवनी और अम्बरतल में"।

सुमित्रानन्दन पंत जी प्रकृति की सुदरता में इतने लीन हो जाते हैं कि उन्हें अपने आस पास का कुछ भी खबर नहीं रहता यहां तक की अपनी प्रेमिका को भी भूल जाते हैं अपनी एक वे कहते हैं :–

"छोड़ द्रुमों की मृदु छाया, तोड़ प्रकृति से भी माया,
बाले, तेरे बाल–जाल में, कैसे उलझा दूँ लोचन"।

कवि जयशंकर प्रसाद ने अपनी रचना 'कामायनी' में आरम्भ से ही प्रकृति के भयानक रूप का वर्णन किया है। इस काव्य में जल प्रलय के बाद सबकुछ नष्ट हो जाता है। कवि ने इस कविता के माध्यम से पाठकों को यह संकेत दिया है कि प्रकृति से कभी भी खिलवाड़ नहीं करना चाहिए। कवि कहते हैं :–

"हिमगिरि के उतुंग शिखर पर, बैठ शीला की ऊपर छाँह।
एक पुरुष, भीगे नयनों से, देख रहा है प्रलय–प्रवाह"।

अज्ञेय के काव्य में मानव और पर्यावरण के बीच अंतः संबंधों दिखाई देती है। उन्होंने अपनी कविता 'असाध्य वीणा' में मनुष्य को आत्मानुभूति प्राप्त करने की प्रेरणा दी है। मनुष्य के भोगवादी प्रवृति के कारण आज प्रकृति खतरे में है। इसलिए हमें प्राकृतिक आपधाओं का निरन्तर सामना करना पड़ रहा है। प्रतिवर्ष कहीं न कहीं प्राकृतिक विनाश की घटनायें देखने मिलती रहती है। आज्ञेय अपनी रचना में मानव को सचेत करते हुए लिखते हैं –

"सिर पर सम्मुख जलता सूरज भभक रहा है
लपटों में घिर देह बचाती पृथ्वी का हरियाला आंचल झुलस गया है
न जाने क्यों नाराज हुए इन्द्रदेव।"

प्रकृति के समस्त जीव जन्तुओं के आवास को नष्ट होने की समस्या को कवि दीपक कुमार अपनी कविता क माध्यम से बताने का प्रयास किया है। अपनी रचना में कहते हैं :–

Edit with WPS Office

''कहाँ बची है छांव जो इत्मिनान से तू ले सके आलाप
कोई तो अमराई बची होगी कहीं पर शहर के बनने की यह रफ्तार है री
जिस तेजी से कटते हैं दरख्त अससे तेज बनते हैं मकान,
कम्बख्त इनकी नींव में दफन हैं मीलें हरी घास के मैदान।''

आधुनिक युग के प्रसिद्ध कवि कुँवर नायण अपनी कविता एक वृक्ष की हत्या में पेड से उनकी दोस्ती, अपनत्व और लगाव को स्पष्ट करते हैं। इस कविता के माध्यम से कवि पाठकों को यह बताने का प्रयास किया है कि पेड–पौधे हमारे अच्छे मित्र होते हैं, हमारे जीवन का प्रमुख अंग होते हैं और पेडों को काटने से उतना ही दुःख होता है जितना अपनो से बिछुडने का। और जंगलों का महत्व, वनों की रक्षा, सुरक्षा और जंगलों क कटने से मानव जाती पर होने वाले प्रभाव को बहुत ही अच्छे से कुँवर नारायण इस कविता में कहते हैं :–

"अबकी घर लौटा तो देखा वह नहीं था–
वही बूढ़ा चौकीदार वृक्ष
जो हमेशा मिलता था घर के दरवाज़े पर तैनात।
पुराने चमड़े का बना उसका शरीर
वही सख़्त जान
झुर्रियोंदार खुरदुरा तना मैला–कुचैला,
राइफ़िल–सी एक सूखी डाल,
एक पगड़ी फूल पत्तीदार,
पाँवों में फटा–पुराना जूता
चरमराता लेकिन अक्खड़ बल–बूता
धूप में बारिश में
गर्मी में सर्दी में
हमेशा चौकन्ना
अपनी ख़ाकी वर्दी में
दूर से ही ललकारता, "कौन?"
मैं जवाब देता, "दोस्त!"
और पल भर को बैठ जाता
उसकी ठंडी छाँव में
दरअसल, शुरू से ही था हमारे अंदेशों में
कहीं एक जानी दुश्मन
कि घर को बचाना है लुटेरों से
शहर को बचाना है नादिरों से
देश को बचाना है देश के दुश्मनों से

Edit with WPS Office

बचाना है–
नदियों को नाला हो जाने से
हवा को धुआँ हो जाने से
खाने को ज़हर हो जाने से :
बचाना है–जंगल को मरुस्थल हो जाने से,
बचाना है–मनुष्य को जंगल हो जाने से।"

आधार ग्रंथ सूची :-

1. रहीम के दोहे : रहीम दास : डायमंड बुक्स, नई दिल्ली – फरवरी 2020
2. आरोग्य अंक, गीता प्रेस, गोरखपुर, संवत 2072
3. श्रीरामचरितमानस, गीता प्रेस गोरखपुर संवत 2072
4. रामचरितमानस– किष्किन्धाकाणड– तुलसीदास– गीता प्रेस– गोरखपुर ।
5. लोकवादी तुलसीदास– विश्वनाथ त्रिपाठी– राधा कृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली– 1974
6. पर्यावरण संरक्षण– अंजलि श्रीवास्तव– नमन प्रकाशन– नई दिल्ली, 2001
7. पंचवची– मैथिलीशरण गुप्त– साहित्य सरोवर, उत्तर प्रदेश – 2017
8. तारापथ– सुमित्रानंदन पंत– लोकभारती प्रकाशन, उत्तर प्रदेश– 2002
9. कामायनी– जयशंकर प्रसाद– राजपाल एणड सन्स, नई दिल्ली– 2014
10. कंक्रीट की अमरैया में कोयल की कूंक– दीपक कुमार पाचापोर– वागार्थ मोर्च– 2016
11. एक वृक्ष की हत्या : कुँवर नारायण– साहित्य गौरव– लावन्या मुदराना, बेंगलूर– 2019

saleembandar@gmail.com 9986327672

Edit with WPS Office